SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-01, September- 2024
www.shikshasamvad.com

उच्च शिक्षा एवं छात्र–असन्तोष : वर्तमान परिदृश्य एवं समकालीन अध्ययन

रशमी गुप्ता
शोधार्थिनी
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, (उ0प्र0)

डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह
शोध पर्यवेक्षक
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, (उ0प्र0)

सारांश

''उच्च शिक्षा में छात्र–असन्तोष नवीन घटना नहीं है। यह–वैश्विक एवं ऐतिहासिक है। इसकी प्रकृति एवं धारणा सार्वभौमिक नहीं होते। ये सापेक्षिक होते हैं। साथ ही यह बहुआयामी भी होता है तथा अकारण नहीं होता है। बदली हुई परिस्थितियों, विद्यमान आवश्यकताओं तथा आने वाली चुनौतियों हेतु आवश्यक है कि इसे अप्रासंगिक न माना जाये। समय–समय पर इसे वैज्ञानिक धरातल पर जाँचने–परखने की आवश्यकता है। यह ऐतिहासिक अवश्य है, परन्तु वर्तमान में इसकी तीव्र मौजूदगी से इन्कार नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत शोधपत्र छात्र–असन्तोष से सम्बन्धित 150 छात्रों द्वारा प्राप्त आंकड़ों पर आधारित है, जिसमें छात्र–असन्तोष के विभिन्न कारणों को जानने का प्रयास किया गया है। साथ ही पूर्व में किये गये शोध अध्ययनों से तुलना एवं पुष्टि सम्बन्धी कार्य भी किया गया है।

अवधारणात्मक स्पष्टीकरण :

उच्च शिक्षा– 10+2 के पश्चात् की स्नातक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित विश्विद्यालयी/महाविद्यालयी स्नातक एवं स्नाकोत्तर स्तर की शिक्षा व्यवस्था।

छात्र/विद्यार्थी :– शोधक्षेत्र की उच्च शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक वर्ग के नियमित छात्र एवं छात्रायें।

अंसन्तोष :– असंतोष अशान्त स्थिति है। यदि छात्र शिक्षा व्यवस्था में, प्रवेशों, पाठ्यक्रमों, परीक्षा प्रणाली, मूल्यांकन, अनुशासन व्यवस्था, राजनीनिक निर्णयों, और शौक्षिक समितियों में प्रतिनिधित्व, जैसे– सामूहिक मामलों पर कुठिंत और वे इसका प्रदर्शन, हिंसा, नारेबाजी, हड़ताल या अन्य किसी भी रूप में करते हैं, तो उसे असन्तोष माना जायेगा।

उत्तरदाता :– स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में अध्ययनरत संस्थागत छात्र एवं छात्रायें।

प्रस्तावना :

परिचय :– उच्च शिक्षा पुस्तकीय ज्ञान तक ही सीमित नहीं होती, बल्कि यह बौद्धिकता की असीम गहराइयों तक जाने एवं उसकी सम्पूर्ण छानबीन की अनुमति हेतु एक धरातल प्रदान करती है। अतः ऐसे में तार्किक रूप से न समझ में आने वाली व्यवस्था के प्रति असहमति का जन्म लेना स्वाभाविक है। इसलिये उच्च शिक्षण संस्थाओं में असहमति सम्बन्धी प्रदर्शनों की झलक अकसर देखने को मिलती है। राजनीति, धर्म, जाति, कानून, शिक्षा व्यवस्था आदि से विद्यार्थियों का सामना वास्तविक रूप में होना उच्च शिक्षा में प्रारम्भ होता है या शायद वे इसको अब समझने लगते हैं। इसलिये इन सभी व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में मत–मतान्तर सम्बन्धी व्यवहार विद्याथियों के जीवन में झलकने लगते हैं। यद्यपि उन पर अनुशासनहीन होने का आरोप निराधार है, क्योंकि विद्यार्थी जीवन, वह भी 'उच्च शिक्षा सम्बन्धी', ऐसे में जोश एवं दुनिया बदल देने के भाव के कारण ही वे उक्त आरोप झेलते हैं।

देश में पिछले कुछ समय से उच्च शिक्षा छात्र–असन्तोष की झकझोर देने वाली घटनाओं ने इस विषय को ज्वलंत बनाया है, और छात्र आन्दोलनों को गुजरे जमाने की बात कहने वालों को निराधार साबित किया है। इस सम्बन्ध में हमारे ज्ञान की कमी वाला एडवर्ड शील्स[1] का 1968 के अध्ययन–निष्कर्ष को महत्वपूर्ण मानना पड़ेगा, जिसमें वे लिखते हैं कि ''विद्यार्थी आन्दोलनों में कौन–से विद्यार्थी, किस हैसियत, यथा– प्रेरक, सहयोगी, उभारने वाले के रूप में भाग लेते हैं, हमें इसके बारे में बहुत कम जानकारी है। हमें यह भी पता नहीं है कि हिंसा की क्रियाओं तथा आक्रामक अथवा अधिकारियों के खिलाफ अवज्ञाओं की किन अन्य क्रियाओं में वे भाग लेते हैं। हम आन्दोलन की प्रक्रिया के क्षेत्र और विशेष रूप में इस बारे में की गई कारवाई कैसे शुरू हुई और फैली, हम नहीं जानते हैं। कितने विद्यार्थी कार्यवाही में भाग लेते हैं और उनकी सहभागिताओं में कितनी पुनरावृत्ति होती है, हम नहीं जानते हैं। हमारा ज्ञान विशेषतः इस बारे में बहुत कम है कि आन्दोलन की शुरूआत कैसे हुई, किस प्रकार यह फैला और विद्यार्थियों को अपनी ओर खींचा, जो ऐसे मुद्दों के प्रति पहले उदासीन थे और प्रारंभिक गड़बड़ी के क्या अवसर रहे।''

देश में पिछले कुछ समय से उच्च शिक्षण संस्थानों में घटी घटना से, चाहे वह हैदराबाद विश्वविद्यालय में पीएच0डी0 के छात्र रोहित वेमुला की आत्महत्या के पश्चात् हुए, प्रदर्शन हों, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में छात्र–असन्तोष की विभिन्न घटनायें, जैसे कन्हैया कुमार पर राष्ट्रद्रोह का मुकदमा सम्बन्धी विवाद, विश्वविद्यालय में फीस वृद्धि के विरूद्ध हुये आन्दोलन, सी0ए0ए0 (नागरिकता संशोधन कानून) के विरूद्ध हुई नारेबाजी, जामिया मिलिया इस्लामिया में पुलिस की कार्यवाही, जादवपुर विश्वविद्यालय में पश्चिम बंगाल के राज्यपाल के कार्यक्रम में जाने सम्बन्धी विवाद हो, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में छात्रा से छेड़छाड़ के पश्चात् उपजा विवाद सहित अनेकों विवाद/प्रदर्शन इस बात को प्रासंगिक बनाते हैं कि छात्रों के असन्तोष सम्बन्धी इन पक्षों की गंभीरता के साथ पूर्णतया वैज्ञानिक तरीके से छानबीन होनी चाहिये। इस सम्बन्ध में राजनीतिक दोषारोषण व्यर्थ है। जैसा कि प्रायः देखा जाता है कि ''विद्यार्थीगण इनका दोष शिक्षा वातावरण और उत्तेजक घटनाओं पर डालते हैं। शिक्षाविद् शिक्षा और बाहरी हस्तक्षेप पर इसका उत्तरदायित्व डालकर अपना भार हल्का कर लेते हैं और अभिभावक व नेता जब जो मन मे आता है, कह बैठते हैं। वे कभी शिक्षा प्रणाली को दोष देते हैं, तो कभी शिक्षकों की अयोग्यता को कोसने लगते हैं, कभी सरकार की नीति को दोषपूर्ण कहकर अपना मन समझा लेते हैं। ऐसा

लगता है कि कोई भी इसके मूल कारणों तक जाने का कष्ट नहीं करना चाहता है, और न ही इसके परिणामों की कल्पना करते हैं। कुछ इसे अन्तर्राष्ट्रीय समस्या का एक अंग मानकर उसके किसी भी हल की सम्भावना की उपेक्षा कर देते हैं।[2]

कोठारी आयोग[3], छात्र असन्तोष की घटनाओं को उच्चतर शिक्षा का हिस्सा मानता है, फिर भी बिना किसी पश्चाताप के तथा असंगत (Irrlevant) और छिछले आधारों पर बढ़ रही घटनाओं पर चिंता व्यक्त करता है।

छात्र–असन्तोष या इससे सम्बन्धित प्रदर्शनों की नकारात्मक अवधारणा से बचने की आवश्यकता है, क्योंकि ऐसा सोचने से उनके द्वारा किये गये ऐतिहासिक परिवर्तनों की उपेक्षा करने की प्रबल संभावना है, और शायद ऐसी सोच से उनके विरूद्ध उठाये गये कदमों से हानिकारक प्रभाव सामने आ सकते हैं। अतः रचनात्मक एवं हितकारी परिणामों के लिये हमें निष्पक्ष होकर जानना पडेगा, कि आखिर समस्या क्या है?

छात्र–असन्तोष के मुद्दे देश भर के विद्यार्थियों के लिये एक जैसे नहीं होते। वे राज्य दर राज्य, अलग–अलग विश्वविद्यालयों, कालेजों में अलग–अलग होते हैं। इस सम्बन्ध में ग्रामीण एवं शहरी कालेजों की भी स्थिति में भिन्नता होती है।

इस सम्बन्ध में एक अध्ययन मणिपुर राज्य में मणिपुर विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर के 190 छात्रों पर किया गया।[4] यह अध्ययन सम्बन्धी शोधपत्र एशियन रिसर्च कंसोरटियम (Asian Research consortium) के अक्टूबर 2015 के अंक में छपा है। M.S Koni Potsangbam and Dr. B.T. Lawani के इस अध्ययन में 45 प्रतिशत छात्रों का मानना था कि छात्र–असन्तोष का मुख्य कारण संस्थाओं में राजनीतिक हस्तक्षेप, 44 प्रतिशत उत्तरदाता अकादमिक कारणों को छात्र असन्तोष का प्रमुख कारण मानते थे, 40 प्रतिशत उत्तरदाता संस्थाओं में अवसंरचनात्मक सुविधाओं एवं अकादमिक वातावरण के अभाव को असंन्तोष का प्रमुख कारण मानते थे। आर्थिक कारणों में 34 प्रतिशत उत्तरदाता, छात्रों की कमजोर आर्थिक एवं वित्तीय दशाओं को मानते थे। अध्ययन में राज्य की कमजोर आर्थिक स्थिति, बेरोजगारी, वयस्कों में नैतिकता का गिरता स्तर, मानवाधिकार उल्लंघन, मार्गदर्शन का अभाव, समाज में मूल्यो में एकमतता का अभाव, राज्य की कानून व्यवस्था भी छात्र–असन्तोष को जन्म देने वाले कारणों में थे।

बबिता सिंह[5] उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के व्यावसायिक एवं गैरव्यावसायिक डिग्री कालेजो में 180 छात्रों पर किये गये एक अध्ययन में पाया कि गैर व्यावसायिक कालेजों के छात्रों में तुलनात्मक रूप से अधिक असन्तोष पाया गया।

छात्र–असन्तोष के सम्बन्ध में वर्ष 2003 में डॉ0 कर्ण सिंह ने कहा था कि ''आज के युवकों में यदि अशान्ति है, तो वह साधारण है। वह युवक ही क्या, जो अशान्त न हो। अगर सरदार भगत सिंह शान्त रहे होते, तो भारत स्वतंत्र नहीं हो सकता था। परन्तु युवकों को ही इस अशान्ति को सही एवं रचनात्मक दिशा देकर अपने भीतर की ज्वाला से एक ऐसे नवभारत का निर्माण करना होगा, जिसे देखकर सारा विश्व चकित रह जाये।

अनेकों शोध निष्कर्षों से ज्ञात हुआ है कि छात्र–असन्तोष बहुआयामी है। कोई भी एक पक्ष इसका कारण नहीं है। बड़ी ही वैज्ञानिक सोच के साथ कहना ठीक रहेगा कि इसका कारण केवल छात्र ही नहीं हैं, शोध निष्कर्ष बताते हैं कि छात्र–शक्ति का दुरुपयोग किया जाता है। अनेकों भटकाने वाली शक्तियां छात्र–हितों वाली राजनीति

के नाम पर विद्यार्थियों को सही मार्गदर्शन नहीं देती हैं। अनेकों बार छात्रों द्वारा किये जा रहे महत्वपूर्ण आन्दोलनों को भी राजनीतिक षड्यंत्र या देश–विरोधी बताकर खारिज कर दिया जाता है।

छात्र–असंतोष एक प्रकार से सामान्यतः विद्यमान शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्था की परिवर्तनशीलता के कारण है। शोधकर्ता द्वारा किये गये शोध में 30 प्रतिशत छात्रों ने यह स्वीकार किया कि विद्यार्थी होने के कारण उन्होंने जाति, धर्म एवं पारिवारिक पहचान को छोड़ दिया है, परन्तु 61 प्रतिशत इसको छोड़ नहीं पाये। गसफील्ड[6] ने भी इस बात को अपने अध्ययन में पाया कि युवाओं ने विद्यार्थी बनने के बाद जाति, परिवार, प्रादेशिक और धार्मिक पहचान को नही छोड़ा है।

उच्च शिक्षा में विद्यार्थीगण बहुधा 16–17 वर्ष की आयु में प्रवेश करते हैं। उस आयु समूह में अनेकों जैविकीय एवं मनोवैज्ञानिक बदलाव आते हैं और उन बदलावों को उनके व्यवहार में देखा जा सकता है। इसी दौरान समाज में भी वह अपनी पहचान बनाने में लगे होते हैं। अतः ऐसी स्थिति में वे उत्पीड़नकारी सामाजिक, आर्थिक ढांचे को अस्वीकारते हैं। अनेकों बार वे ऐसा मानते हैं कि उन्हें ऐसा कुछ विशेष करना है, जिसको पूर्व की पीढ़ियां करने में सफल नहीं हुई हैं।

शोध–अध्ययन :

प्रस्तुत शोध उत्तर प्रदेश (भारत) के बरेली मंडल के दो जिलों में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्थित महाविद्यालयों में संस्थागत रूप से अध्ययनरत स्नातक एवं स्नातकोत्तर के 150 छात्र–छात्राओं से प्राप्त सूचनाओं, आंकड़ों पर आधारित है।

शोध पद्धति :

छात्र–छात्राओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के माध्यम से किया गया है, जिसमें स्नातक के 129 एवं स्नातकोत्तर के 21 छात्र–छात्रायें हैं। अध्ययन में शामिल 150 छात्र–छात्राओं में कला, विज्ञान, वाणिज्य एवं व्यावसायिक वर्ग के क्रमशः 62,48,36 एवं 04 विद्यार्थी/उत्तरदाता शामिल हैं।

अध्ययन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक सामाग्री को संकलित किया गया है। प्राथमिक आंकडों हेतु साक्षात्कार अनुसूची एवं द्वितीयक आंकडों/सूचनाओं हेतु प्रकाशित समाग्री का प्रयोग किया गया है।

शोध–परिणाम :

शोध–परिणाम एवं शोध–निष्कर्ष शोधार्थी द्वारा अध्ययन हेतु एकत्रित प्राथामिक आंकडों/ तथ्यों पर आधारित है। शोध अध्ययन के परिणाम निम्नवत् हैं–

सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि :

- शोध अध्ययन में 56.66 प्रतिशत विद्यार्थी ग्रामीण, 25.33 प्रतिशत नगरीय, एवं 18.01 प्रतिशत कस्बे की पृष्ठभूमि के हैं।

- 46.01 प्रतिशत विद्याथियों का पारिवारिक पेशा कृषि, 23.33 प्रतिशत का व्यापार, 15.33 का नौकरी, 15.33 का मजदूरी है।
- अध्ययन में 90 प्रतिशत अविवाहित तथा 10 प्रतिशत विवाहित उत्तरदाता विद्यार्थी हैं।

छात्र–असंतोष के मुद्दे एवं कारण :

- अध्ययन में 71.33 प्रतिशत उत्तरदाता विद्यार्थियों ने माना कि उनकी शिक्षण संस्थाओं छात्र–असन्तोष है। 28.67 प्रतिशत विद्यार्थियों ने छात्र–असन्तोष के होने से इन्कार किया।
- 76 प्रतिशत उत्तरदाता विद्यार्थी, उच्च शिक्षा के वर्तमान ढांचे (जिसमें पाठ्यक्रमों की स्थिति, प्रवेश प्रक्रिया, शिक्षण पद्धति, परीक्षा पद्धति एवं मूल्यांकन शामिल हैं), से सन्तुष्ट थे। 24 प्रतिशत उत्तरदाता विद्यार्थी असन्तुष्ट थे।
- परिसरों में अनुशासन व्यवस्था के सम्बन्ध में 64 प्रतिशत उत्तरदाता विद्यार्थी अपने परिसरों की अनुशासन व्यवस्था से सन्तुष्ट थे। 36 प्रतिशत विद्यार्थी अनुशासन व्यवस्था से सन्तुष्ट नहीं थे।
- 64 प्रतिशत विद्यार्थी अपनी संस्थाओं में पुस्तकालय सहित अन्य शैक्षणिक सुविधाओं तथा सेमिनार, इण्टरनेट सुविधाओं इत्यादि से सन्तुष्ट थे। 36 प्रतिशत विद्यार्थी असंतुष्ट थे।
- अध्ययन में 79.33 प्रतिशत उत्तरदाता अपनी शिक्षण संस्थाओं की अवसंरचनात्मक सुविधाओं, तथा बिजली, पानी, जनरेटर, हॉस्टल इत्यादि सें संतुष्ट थे। 20.66 प्रतिशत विद्यार्थी असन्तुष्ट थे।

छात्र–असंतोष के शैक्षणिक पहलू :

- अध्ययन में 71.33 प्रतिशत उत्तरदाता विद्याथियों ने अपनी संस्था पर अध्यापन कार्य हेतु शिक्षकों की पर्याप्त संख्या को स्वीकार किया। 28.67 प्रतिशत विद्यार्थियों ने स्वीकार किया कि उनकी संस्था में जो शिक्षक हैं, वे अध्यापन हेतु पर्याप्त नहीं हैं।
- शिक्षण संस्थाओं में जो शिक्षक अध्यापन हेतु उपलब्ध हैं, क्या उनमें पर्याप्त योग्यता है? इस सम्बन्ध में 72 प्रतिशत विद्यार्थियों ने माना कि शिक्षकों में पर्याप्त योग्यता है तथा 28 प्रतिशत ने शिक्षकों का अयोग्य होना स्वीकार किया।
- शिक्षकों द्वारा ट्यूशन पढ़ाने की गतिविधि को 54 प्रतिशत विद्यार्थी गलत मानते हैं, 46 प्रतिशत उत्तरदाता सही ठहाराते हैं।
- अध्ययन में 48.66 प्रतिशत वर्तमान उच्च शिक्षा को रोजगार हेतु पर्याप्त नहीं मानते हैं और वे रोजगार हेतु अन्यत्र शिक्षा ग्रहण कर रहे थे।

- 47.33 प्रतिशत उत्तरदाता विद्यार्थियों का मानना था कि शिक्षण संस्थाओं में परीक्षार्थी (परीक्षा पास करना) बनने का वातावरण है। विद्यार्थी (ज्ञान अर्जित करना) बनने का नहीं।
- अध्ययन में 35.33 प्रतिशत विद्यार्थी शिक्षण फीस, 25.33 प्रतिशत शिक्षक व्यवहार, 16.66 प्रतिशत कर्मचारियों के व्यवहार, 10.66 प्रतिशत अध्यापन कार्य एवं 12.02 प्रतिशत उत्तरदाता विद्यार्थी प्लेसमेंट की कमी को छात्र–असन्तोष का प्रमुख कारण मानते हैं।
- छात्र–असन्तोष के प्रदर्शनों सम्बन्धी मुद्दों की प्रकृति पर 41.33 प्रतिशत उत्तरदाता विद्यार्थी मानते हैं कि ऐसे प्रदर्शन शैक्षणिक होते हैं, 27.33 प्रतिशत विद्यार्थी ऐसे प्रदर्शनों को राजनीतिक, 25.33 प्रतिशत सामाजिक एवं 6.01 प्रतिशत उत्तरदाता विद्यार्थी आर्थिक कहते हैं।
- 17.23 प्रतिशत उत्तरदाता छात्र संगठनों द्वारा छात्रों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व न करने एवं राजनीतिक होने को स्वीकार करते हैं।
- 64 प्रतिशत उत्तरदाता विद्यार्थी मानते हैं कि छात्र असंतोष सम्बन्धी प्रदर्शनों में शामिल विद्यार्थियों पर राजनीतिक सरपरस्ती होती है।
- 92 प्रतिशत उत्तरदाता विद्यार्थियों का मानना है कि जो छात्र प्रदर्शनों में शामिल रहते हैं, वे कक्षाओं में कम ही उपस्थित रहते हैं। 8 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि ऐसे छात्र कक्षाओं में बिल्कुल ही उपस्थित नहीं रहते। इस सम्बन्ध में मणिपुर विश्वविद्यालय परिसर में 190 विद्यार्थियों पर हुए अध्ययन में 57 प्रतिशत विद्यार्थियों ने यह स्वीकार किया कि वे प्रदर्शनों के दौरान कक्षाओं में उपस्थित नहीं रहते, बल्कि प्रदर्शनों में भाग लेते हैं।
- अध्ययन में 72.66 प्रतिशत उत्तरदाता विद्यार्थी छात्र असन्तोष सम्बन्धी प्रदर्शनों का समर्थन करने या देने को स्वीकार करते है।
- 58.66 प्रतिशत उत्तरदाता विद्यार्थियों ने अवसर प्राप्त होने पर राजनीतिक इच्छा को स्वीकार किया।
- 55.33 प्रतिशत उत्तरदाता यह स्वीकार करते हैं कि विद्यार्थियों को प्रदर्शन इसलिये करने पड़ते हैं कि संस्थायें उनकी जायज मांगों को पूरा नहीं करती हैं।
- छात्र–असंतोष सम्बन्धी प्रदर्शनों में भूमिका सम्बन्धी प्रश्न पर 50.01 प्रतिशत उत्तरदाता विद्यार्थियों ने राजनीतिक दलों की भूमिका को स्वीकार किया, 23.66 प्रतिशत ने अभिभावकों, 20 प्रतिशत ने शिक्षकों और 6.33 प्रतिशत ने पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारियों की भूमिका स्वीकार की।
- अध्ययन में 88 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना था कि शिक्षकों की राजनीतिक महत्वाकांक्षायें छात्र–असन्तोष को जन्म देने का कारण हैं।
- उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् रोजगार प्राप्ति की चिंता भी छात्र असंतोष को जन्म देती है। इस सम्बन्ध में 35.33 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के दो वर्ष बाद रोजगार मिलने की आशा है, 28 प्रतिशत एक वर्ष तक, 14.66 प्रतिशत 05 वर्ष तक अपेक्षा करते हैं, जबकि 22 प्रतिशत विद्यार्थी

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

मानते हैं कि रोजगार की कोई संभावना नहीं है। देश में व्याप्त बेरोजगारी के लिये 36.66 प्रतिशत उत्तरदाता सरकारी नीतियों एवं 21.33 प्रतिशत गैर प्रासंगिक शिक्षा को जिम्मेदार मानते हैं।

- 78 प्रतिशत उत्तरदाता विद्यार्थी भ्रष्टाचार से कुंठित एवं चिंतित थे, जिसको वे अक्सर छात्र–असन्तोष के रूप में व्यक्त करते हैं।
- छात्र–असंतोष सम्बन्धी प्रदर्शनों में शामिल विद्याथियों में उच्च व दबंग जातियों के अधिकांश विद्यार्थीगण शमिल रहते हैं।
- छात्र असंतोष के रूप में देश के अन्दर छात्रों द्वारा अनगिनत गैर कानूनी एवं आपराधिक घटनाओं को किया जाता है। ऐसी घटनाओं की सूची काफी लम्बी हो सकती है तथा छात्रहित की आड़ में राजनीतिक कार्य कियें जाते हैं।

निष्कर्ष :

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उच्च शिक्षण संस्थाओं में छात्र–असन्तोष के कारणों, मुद्दे सहित विभिन्न पहलुओं को जानना था। अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर सामान्य रूप से छात्र असन्तोष के विद्यार्थियों के बीच होने की बात सत्य है और यह असन्तोष शैक्षणिक एवं गैर–शैक्षणिक दोनों ही प्रकार का है। शैक्षिक कारणों में शिक्षकों द्वारा कक्षाओं के स्थान पर ट्यूशन पढ़ाने को लेकर, शिक्षा की गैर–प्रासंगिकता, परिसर से स्पर्द्धा एवं शैक्षिक प्रोत्साहन सम्बन्धी वातावरण का अभाव, शिक्षण फीस, शिक्षक व्यवहार, कर्मचारियों का व्यवहार, कैरियर प्लेसमेंट की कमी, शैक्षिक परिसरों में अनुशासन व्यवस्था मुख्य कारणों में से हैं। इसके अतिरिक्त अवसंरचनात्मक सुविधाओं, शिक्षकों की पर्याप्त संख्या का अभाव परीक्षा एवं मूल्यांकन पद्धति भी असंतोष के शैक्षिक कारणों में से थे। गैर शैक्षणिक कारणों में मुख्य रूप से राजनीतिक दलों, परिसरों के अनावश्यक हस्तक्षेप एवं छात्रों को भ्रमित करना, छात्रों की राजनीतिक महत्वकांक्षा, शिक्षकों की राजनैतिक महत्वाकांक्षायें, भ्रष्टाचार, सरकार या राजनैतिक दलों द्वारा किये जाने वाले निर्णय एवं क्षेत्र विशेष में उच्च जातियों, दबंग जातियों के विद्यार्थियों की गैर जरूरी भूमिकायें शामिल हैं।

अतः कहा जा सकता है कि छात्र– असन्तोष को, विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, उनकी समस्याओं पर संवेदनशीलता के साथ विचार करके कारगर कदम उठाकर समाप्त किया जा सकता है। शैक्षणिक समस्याओं हेतु शिक्षाविदों, अभिभावकों एवं राज्य का सहयोग लिया जा सकता है।

सुझाव :

सुझावों के रूप में कहा जा सकता है कि छात्र असंतोष को अकारण ही अनुचित नहीं ठहराया जाना जाहिये। निश्चित रूप से इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलू हैं, परन्तु चूंकि छात्र देश की रीढ़ होते हैं और देश का भविष्य उन्हीं के कंधों पर होता है, अतः उनकी समस्याओं, चिंताओं और आकांक्षाओं को बड़ी ही संवेदनशीलता के साथ बिना किसी द्वेष भावना के वैज्ञानिक स्तर पर जानने की आवश्यकता है। अनेकों मुद्दे एवं कारण उन्हें असंतोष के प्रदर्शन हेतु प्रेरित करते हैं। परन्तु असन्तोष की तीव्रता को कम कैसे किया जा सकता है इस हेतु शोध आंकड़ों में विद्यार्थियों से एक गुणात्मक प्रश्न भी किया गया, जिसमें विद्यार्थियों के सुझाव थे कि छात्रों को

अनुशासन में रहकर शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये, दूसरे छात्रों का शैक्षिक नुकसान, जातिगत भेदभाव तथा राजनीति करने वाले छात्रों पर कार्यवाही होनी चाहिये। छात्रों को उनकी इच्छा–अनुसार शिक्षा न मिल पाने के कारण, लोकतंत्र का अनुचित लाभ, राजनीतिक प्रतिद्वन्द्विता, नैतिकता का अभाव एवं पश्चिमीकरण का प्रभाव भी छात्र असंतोष को जन्म देता है। कुछ का मानना था कि शिक्षा में सुधार होना चाहिये, क्योंकि 'पढ़ेगा इंडिया तो बढ़ेगा इंडिया।' शिक्षकों का सम्मान करने का सुझाव भी विद्यार्थियों ने दिया, परन्तु कुछ का मानना था कि परिसरों में शिक्षक ही पर्याप्त नहीं हैं, इसलिये असंन्तोष पनपता है। कुछ का कहना था कि परिसरों में मोबाइल पर प्रतिबंध होना चाहिये तथा कुछ छात्रों का मानना था कि ट्यूशन के माध्यम से शिक्षा बंद होनी चाहिये और वह केवल शिक्षा परिसर में ही दी जानी चाहिये।

कहा जा सकता है। कि छात्र असंतोष को शिक्षा व्यवस्था में कमी के रूप में स्वीकार करना चाहिये। बेबुनियाद एवं निराधार कल्पना शीलता से इस सम्बन्ध में दूरी आवश्यक है।

: संदर्भ सूची :

1. Shils, Edwards,"Students, Politics and universities in india In Turmoil and Transition: Higher Education and students Politics in india Edited by P.G Altbach. Bombay Lalvani Publishing House, 2004.
2. अग्रवाल बी0 बी0, ''आधुनिक भारतीय शिक्षा और समस्यायें'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, पृष्ठ 350
3. अग्रवाल, बी0 बी0,'' पूर्वोक्त, पृष्ठ 350
4. Potsangbum, koni and Lawani, B.T, " The student Unrest in the state of Manipur: An Empirical Analysis: Asian Journal of Research in social Sciences and humanities, Vol.5 No. 10 oct. 2015 PP-22.30. https:// aijsh.com
5. Singh, Babita, " A study of student unrest among graduate students in relation to their Gender, Intelligence, Adjustment and educational stream, " International Journal of Education and Psychological Research, Vol-2,, Issue I, pp-40-46, January 2021.
6. Gusfield, Joseph R. , ' An Academic Milieu, " In the student Revolution: A Global Crises . Edited by Phillip G. Altbach.Delhi; Lalvani Publishing House. 2022.
7. Shah , B.V " Social Change and college students of Gujrat. Baoroda: The Maharaja Sayajirao University of baroda,2012.
8. Potsangbum, Koni and lawani, B.t op. cit.

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-01, Sept.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Sept-2024/33

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

रशमी गुप्ता और डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह

For publication of research paper title

"उच्च शिक्षा एवं छात्र–असन्तोष : वर्तमान परिदृश्य एवं समकालीन अध्ययन"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-01, Month September, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com